Carnlin Page

नाम :- फलके स्वाती नामदेव
कॉलेज :- कला, वाणिज्य और विज्ञान
महाविद्यालय सोनई.

कक्षा :- M.A - I
हजेरी क्र :- 202
विषय : शनि शिंगणापुर में आनेवाले
भक्तों को हिंदी बोलने में
आनेवाली समस्या।

शनि शिंगणापुर

Scanned by TapScanner

INDEX

NAME: फलके स्वाती नामदेव SUBJECT

MA - 1 DIV ROLL NO 202 SCHOOL

NO	PAGE NO	TITLE	DATE	TEACHER'S SIGN / REMARKS
1.		प्रस्तावना		
2.		शनि शिंगणापुर - परिचय।		
3.		गाँव - मान्यताएँ।		
4.		शनि - महिमा।		
5.		एक धार्मिक स्थल - शनि शिंगणापुर।		
6.		शनि भगवान की स्वयंभु मुर्ति से संबंधित पौराणिक कथा।		
7.		शनि शिंगणापुर में आनेवाले भक्तों को हिंदी बोलने में आनेवाली समस्या।		
८		निष्कर्ष		

Scanned by TapScanner

प्रस्तावना

॥ ॐ शं: शनैश्चराय नम: ॥

महाराष्ट्र के अहमदनगर जिले में स्थित शनि शिंगणापुर धार्मिक दृष्टी से एक महत्वपूर्ण स्थान है। यहाँ की प्राचीन शनि भगवान की स्वयंभु मुर्ति बिना छत के खुले आसमान के निचे विराजमान है। लाखों की संख्या में यहाँ भक्त विविध राज्यों से भगवान की भक्ति आराधना करने के लिए आते है। शनिवार के दिन आनेवाली अमावस और शनिवार के दिन ~~कि~~ विशेष भीड़ होती है। यहाँ पर भक्त पुजा अभिषेक आदि करते है।

धार्मिक स्थानों पर भक्तों को कुछ समस्यांओं का सामना भी करना पडता है। भाषा इसमें महत्वपुर्ण होती है। भक्त लोगों के साथ बातचीत करके उस धार्मिक स्थान के बारें में जानने के लिए उत्सुक होते है। धार्मिक स्थानों पर जाने के बाद आंतरिक शांति एवं सुख की अनुभुति होती है।

Scanned by TapScanner

शनि शिंगणापुर

शनि शिंगणापुर भारत के महाराष्ट्र राज्य के अहमदनगर जिले में स्थित एक गाँव है। जो शनि देवता के मंदिर के लिए प्रसिद्ध है। शनि देव की भक्ति, आराधना, दर्शन के लिए तमाम भक्तगण यहाँ आते है।

मुर्ति :-

शनि भगवान की स्वयंभु मुर्ति काले रंग की है। 5 फुट 9 इंच ऊँची एवं 1 फुट 6 इंच चौडी यह मुर्ति संगमरवर के एक चबुतरे पर धुप में ही विराजमान है। यहाँ शनिदेव अष्ट प्रहर धुप हो, आँधी हो, तुफान हो या जाडा हो, सभी ऋतुओं में बिना छत्र धारण किए खडे है। राजनेता व प्रभावशाली वर्गों के लोग यहाँ नियमित रूप से एवं साधारण भक्त हजारों की संख्या में देव दर्शनार्थ प्रतिदिन आते है।

हजारो भक्त अनेक राज्यों से शनि शिंगणापुर में भगवान की पुजा-दर्शन के लिए आते है। यह एक धार्मिक पर्यटन का केंद्र भी बना है। कुछ लोग पर्यटन के लिए भी आते है। हर धर्म, राज्य, प्रदेश के लोग शनिदेव की पुजा के लिए आते है। शनिवार के दीन को विशेष रूप से भक्तों की भीड अधिक होती है।

Scanned by TapScanner

गाँव की मान्यताए / गाँव

लगभग तीन हजार जनसंख्या के शनि शिंगणापुर गाँव में किसी भी घर में दरवाजा नही है।

गाँव में यह मान्यताएं / किवदंतियाँ है कि घरों की, गाँव की रक्षा स्वयं शनिदेव ही करते है। उनकी कृपादृष्टी हमेशा अपने भक्तो पर बनी रहती है। यहाँ के घरों को दरवाजे नही है कही भी कुंडी तथा कड़ी लगाकर ताला नही लगाया जाता। इतना ही नहीं, घर में लोग अलमारि, सूटकेस आदि नही रखते। और ऐसा कहा जाता है कि ऐसा शनिदेव की आज्ञा से किया जाता है।

लोग घर की मूल्यवान वस्तुएँ, गहने, कपडे, रुपए - पैसे आदि रखने के लिए थैली तथा डिब्बे या ताक का प्रयोग करते है। केवल पशुओं से रक्षा हो, इसलिए बाँस का ढँकना दरवाजे पर लगाया जाता है।

गाँव छोटा है, पर यहाँ के लोग समृद्ध है। इसलिए लोगों के घर आधुनिक तकनीक से ईंट - पत्थर तथा सिमेंट का इस्तेमाल करके बनाए गए है। फिर भी दरवाजों में किवाड़ नही है। यहाँ पर कभी चोरी नही हुई है। भक्तों के लिए भी यहाँ रहने - खाने - पिने की सारी सुविधाएँ उपलब्ध है।

Scanned by TapScanner

Camlin Page

शनि - महिमा

शनिवार के दिन आनेवाली अमावस को तथा प्रत्येक शनिवार को महाराष्ट्र के कोने-कोने से दर्शनाभिलाषी यहाँ आते है। तथा शनि भगवान की पुजा, अभिषेक आदि करते है। प्रतिदिन प्रातः 4 बजे एवं सायंकाल 5 बजे यहाँ आरती होती है। शनि जयंती पर जगह-जगह से प्रसिद्ध ब्राम्हणों को बुलाकर 'लघु रुद्राभिषेक' कराया जाता है। यह कार्यक्रम प्रातः 7 से सायं 6 बजे तक ~~ता~~ चलता है।

हिंदु धर्म में शनिदेव को मानते है। हिंदु धर्म में कहते है कि कोबरा का काटा और शनि का मारा पानी नही माँगता। शुभ दृष्टी जब इनकी अपने भक्तों पर होती है तो रंक भी राजा बन जाता है। तो देवता, असुर, मनुष्य, सिद्ध विद्याधर और नाग यह सब इनकी अशुभ दृष्टी पडने पर नष्ट हो जाते है। परंतु यह स्मरण रखना चाहिए की यह ग्रह मुलतः आध्यात्मिक ग्रह है। महर्षि पराशर ने कहा कि शनि जिस अवस्था में होगा, उसके अनुरुप फल प्रदान करेगा। जैसे प्रचंड अग्नि सोने को तपाकर मनुष्य को उन्नति पथ पर बढने की सामर्थ एवं लक्ष्य प्राप्ती के साधन उपलब्ध कराता है। नव-ग्रहों में शनि को सर्वश्रेष्ठ इसलिए कहा जाता है, क्योंकी यह एक राशी पर सबसे अधिक, ज्यादा समय तक विराजमान रहता है। श्री शनि देवता अत्यंत जाज्वल्यमान और जागृत देवता है।

Scanned by TapScanner

एक धार्मिक स्थल : शनि शिंगणापुर

महाराष्ट्र के अहमदनगर जिले में स्थित शनि शिंगणापुर धार्मिक दृष्टी से एक महत्वपूर्ण ठिकाण है। शनि देव की आराधना के लिए यहाँ भक्तों की भीड़ लगती है। शिंगणापुर गाँव में स्थित पौराणिक पाषाण की मुर्ती श्रद्धा एवं आकर्षण का कारण है। यहाँ की मुर्ती और स्थापना से जुडी अनेक कहानियाँ प्रचलित है। ऐसा कहा जाता है की यह शनि मुर्ती पानी में बहती हुई इस गाँव में पहुँची। शनिदेव को प्रसन्न करने हेतु और अपने दुखः दर्द दुर करने के लिए भक्त शनिदरबार में हाजिरी देते है। श्री शनिदेवता अत्यंत जाज्वल्यमान और जाग्रत देवता है। आजकल शनि देव के दर्शन के लिए प्रत्येक वर्ग के लोग इनके दरबार में नियमित हाजिरी दे रहे है। अमावस्या / शनिवार के दीन आनेवाली अमावस और शनिवार के दिन यहाँ विशेष रूप से विविध प्रदेश, राज्यों से भक्त आते है। यहाँ पर स्थित शनि भगवान की स्वयंभु काले वर्ण की मुर्ती 5 फुट 9 इंच उँची एवं 4 फुट 6 इंच चौडी है। यहाँ पर आकर भक्त अपने दुख दर्द भुलकर भगवान की भक्ति और आराधना में मग्न होते है। यहाँ आकर भक्तों को आंतरिक शांति का अनुभव होता है।

Scanned by TapScanner

भारतीय संस्कृती में प्राचीन काल से भगवान की पुजा - अर्चना की विशेष मान्यता है। भगवान के प्रति विश्वास और श्रद्धा का ज्वलंत उदाहरण हमें देखने को मिलते है। हमारे देश में अनेक धार्मिक स्थल है। हिंदु धर्म में तैतीस कोटी देवी- देवताओं की आ--राधना की जाती है। हमारे देश में अनेक प्राचीन धार्मिक स्थल हमें देखने को मिलते है।

हिंदु, मुस्लिम, सिख, ईसाई या फिर दुनिया के अन्य धर्म, सभी धर्मों में धार्मिक स्थलों का महत्व बहुत अधिक माना जाता है। हम किसी भी धार्मिक स्थल पर जाते है तो हम अपने अंदर एक आंतरिक शांति, एक आंतरिक सुख की अनुभुति करते है। धार्मिक स्थल पर जाने के बाद हमें वहाँ के वातावरण में जो शांति, सुकुन महसुस होता है। वह और कही नही होता। अपने अंदर हमें एक आत्मिक शांती महसुस होती है। ऐसा लगने लगता है जैसे सारी चिंताए गायब हो रही हो। हम यह, जो परिवर्तन, शांति और सुख महसुस करते है। इसका कारण है धार्मिक स्थलो का वातावरण और इस वातावरण में मिलनेवाली सकारात्मक ऊर्जा।

हिंदु धर्म में ऐसा माना जाता है की धार्मिक स्थान, जगाहे आत्मा को सुख प्रदान करती है, प्रकृती का यह रूप हमारी आत्मा को परमात्मा से मिलाने में सहायक सिद्ध होता है।

Scanned by TapScanner

Camlin Page

मराठी भाषा इस प्रदेश की प्रादेशिक बोली है। महाराष्ट्र में सूर्यपुत्र शनिदेव का यह प्रसिद्ध मंदीर है। महाराष्ट्र के अहमदनगर जिल्ले में स्थित शिंगणापुर का शनि मंदिर। विश्व के प्रसिद्ध इस शनि मंदिर की विशेषता यह है कि यहाँ स्थित शनि देव की पाषाण प्रतिमा बगैर किसी छत्र या छाया के खुले आसमान के नीचे एक संगमरवर के चबुतरे पर विराजित है। देश - विदेश से श्रद्धालु यहाँ आकार शनिदेव की इस दुर्लभ प्रतिमा का दर्शन लाभ लेते है। पुजनादि सामग्री के लिए यहा आस-पास बहुत सारी दुकाने है। जहाँ से भक्तगण पुजन सामग्री लेकर शनिदेव को अर्पित करते है।

Scanned by TapScanner

शनि शिंगणापुर : शनि भगवान की स्वयंभु मुर्ति से संबंधित पौराणिक कथा।

श्री शनिदेव की पाषाण की मूर्ति 5 फुट 9 इंच लंबी तथा 1½ फुट 6 इंच चौड़ी है। मुर्ती धुप, ठंडी तथा बरसात में रात-दिन खुले आकाश के नीचे है। इसके संबंध। संदर्भ में स्थानिय लोगों। बुजुर्गों से सुनने में मिला है कि लगभग 350 वर्षों पहले शिंग-णापुर में मुसलधार, घमासान बारिश हुई। बारिश इतनी तेज थी कि सामने कुछ स्पष्ट दिखाई नही दे रहा था। खेती बाह के पानी से नष्ट हो चुकी थी, बहुत सी वस्तुएं बाढ़ के पानी में बह गई थी। किसी ने सोचा भी नही था की इतनी तेज बारिश होगी। शायद अब तक यहाँ इतनी तेज बारिश कभी नही हुई थी। इस बाढ के फलस्वरूप छोटे से देहात के आसपास बाढ आई और गाँव के बगल से पानस नाला बहता था। प्रस्तुत श्याम वर्ण पत्थरनुमा शनि भगवान की मुर्ती बहकर आई और पडोस के ही बेर के पेड से अटककर रुक गई।

वर्षा कम होते ही बाढ का पानी कम हुआ, अतः कुछ लोग अपनी सोपडी से बाहर निकले। ईश्वर की कृपा से बारिश हुई, कहकर संतुष्ट हुए। गाँव में खेती के साथ-साथ

Camlin Page

पशुपालन का भी व्यवसाय है। अतः गाय, भैंस आदि चराने के लिए कुछ गोपाल अपनी गायें चराने के लिए पानसनाला के तट पर गए। वहाँ उन्हे बेर के पेड में से एक काले रंग की शिला दृष्टीगोचर हुई। इसे देखते ही वह दाँतो तले उंगली दबाने लगे की इतनी बडी शिला यहाँ बहते-बहते कैसे अटक गई ? एक ने दुसरे को दिखाया दुसरे ने तीसरे को ऐसा करते करते चार-पाँच गोपाल एकट्ठे हुए। बातचीत के बाद उन्होंने जिज्ञासावश अपनी लाठी की नोंक से शिला को स्पर्श किया, करते ही उस स्थान पर टप्-टप् खुन बहने लगा। फलस्वरुप वहाँ एक बडी बडी चोट के कारण जख्म का निशान दिखाई दिया। वह आघात स्पष्ट प्रतिबिंबित हो रहा था। खुन को बहते देखकर लडके डरने लगे। वह अपनी गायों को छोडकर सकपकाते हुए भागकर गाँव में आए। ग्राम में बुजुर्ग तथा अभिभावक माता-पिता पूछने लगे की क्या हुआ ? थोडी देर के बाद उन्होंने बडों को शिला का चमत्कार कथन किया। हकीकत सुनकर बडे-बुजुर्ग भी विस्मय चकित हुए। शिला के वक्तस्त्राव की खबर हवा की तरह सर्वत्र फैल गई। सारे लोग घर छोडकर वह करिश्माई देखने पहुँच गए। शाम होती ही सब अपने-अपने घर चले गए। अब इस शिला का कल कुछ करेंगे इस निर्णय के साथ सब लोग रात में खा-पिकर सो गए। लेकिन प्रस्तुत अलौकिक

Scanned by TapScanner

घटना के कारण रातभर किसी को अच्छी-नींद नहीं आई। कुछ लोग रतजगा करते रहे तो कुछ अनिच्छा से आँखे बंद कर सोने की कोशिश करते रहे।

अचानक उसी रजनी बेला में एक स्थानिय निवासी को थोडी सी नींद आई और नींद मे उसने जो चमत्कार देखा था उसी संदर्भ में सपने में शनिदेव ने उससे जो बातचीत की उसका अंश इस प्रकार है - "कल तुमने, गाँव वालो ने, गोपालों ने जो कुछ देखा है, वह सब सच है।" "आप कौन बोल रहे है?" "भक्त, मैं साक्षात शनिदेव बोल रहा हूँ। मुझे वहाँ से उठाइए और मेरी प्रतिष्ठापना कीजिए - इति शनि भगवान।

दुसरे दिन उस भक्त ने गाँव के लोगों को अपने सपने के बारे में कथन किया जिसे सुनकर सब लोग दंग रह गए। उस भक्त के कहने पर बैलगाडी लेकर मुर्ति के पास पहुँचे। मुर्ती को उठाकर बैलगाडी में चढाने का प्रयास किया परंतु वह कामयाब नही हुए। दिन-भर प्रयत्न करने के बावजूद मुर्ति टस से मस नही हुई। अंत में लोग मायुस होकर अपने अपने घर लौट गए।

तिसरे दिन फिर शनि भगवान ने अपने भक्त के स्वप्न मे आकर बताया की मैं उस स्थान से तभी उठुंगा, जब उठाने वाले रिश्ते में सगे मामा-भानजे हो। और जो बैल जोतेंगे वह भी रिश्ते वह काले वर्ण के हो तथा

में सगे मामा - भानजे हो। निंदे खुली तो सुबह उसने यह दृष्टांत गांव वालों को बताया और गाँव वालों ने वही किया। तब कहीं मूर्ति कहीं बेर की डाली पर डाली गई। यह कितने ताज्जुब की बात रही कि जहाँ पहले मूर्ति को एकसाथ अनेक लोगों द्वारा उठाने का प्रयास किया लेकिन वह व्यर्थ रहा। जब केवल दो सगे मामा - भानजे उठाने लगे तब वह सफल रहे।

मनुष्य स्वभाव या भक्त के स्वभाव की बात यहाँ देखने लायक है। जिस भक्त के सपने में शनिदेव आते रहे, उसने मन ही मन में उस मूर्ती की स्थापना अपनी ही जमीन में करने की पुरी कोशिश की परंतु आज जिस स्थान पर मुर्ति शोभायमान है, उस स्थान पर आते ही हलचल हुई और मुर्ति की प्राण प्रतिष्ठा संपन्न हुई।

प्रस्तुत चमत्कार के साक्षी तब गाँव के सारे लोग थे। कई दिनों तक मुर्ति जमिन पर मामुली चबुतरे पर थी। आज जो चबुतरा दृष्टिगोचर होता है वह तब नहीं था। एक भक्त की मनोकामना पूर्ण होने पर उसने वह बनाया था। इसकी भी एक अलग कहानी है।

इस प्रकार आज हमें जिस स्थान पर शनि भगवान की मुर्ति दिखाई देती है वहा पर उसकी प्राणप्रतिष्ठा हो गई। हमे आज भी बडे - बुजुर्गो द्वारा शनि शिंगणापूर में

स्थित शनि भगवान की स्वयंभू मूर्ति से संबंधित यह कहानी सुनने को मिलती है। यह भक्तों की श्रद्धा और उनका अपने भगवान पर विश्वास को दृढ बनाता है। इसी तरह हम अनेक धर्मस्थलों की और स्थापित मुर्तियों की और भी अनेक पौराणिक कथाएं सुनने को मिलती है।

यह पौराणिक कथाएं हमे तत्कालिन लोगों की भक्ति और श्रद्धा से अवगत कराती है। आज देश के कोने-कोने से एक राज्य से भक्त शनि भगवान के दर्शन हेतु यहाँ आते है। इन कथाओं के आधार पर हमें उस समय की परिस्थितीयों का ज्ञान होता है। इसे मानना या न मानना भक्त की अपने बुद्धी पर निर्भर होता है।

इस प्रकार महाराष्ट्र के अहमदनगर जिले में स्थित शिंगणापुर गाँव की शनि भगवान की मुर्ती और उससे संबंधित कथाएं हमें आज भी सुनने को मिलती है।

Scanned by TapScanner

शनि शिंगणापुर में आनेवाले भक्तों को हिंदी बोलने मे आनेवाली समस्या।

हमारी प्राचीन परंपरा में धर्म को, देवी-देवताओं की आराधना एवं धार्मिक स्थानों को जीवन में सुख, शांती प्राप्त करने के लिए एक महत्वपूर्ण स्थान है। शनि देव को प्रसन्न करने हेतु और अपने दुखः दर्द दुर करने के लिए विविध राज्यों से भक्त इस गाँव में हाजिरी लगाते है। विविध राज्यों से आए भक्तों की भाषाएँ उनके राज्य की एक विशिष्ट बोली होती है। परंतु शनि शिंगणापुर महाराष्ट्र राज्य में अहमदनगर गाँव में स्थित है और यहाँ मराठी भाषा का प्रयोग किया जाता है। भक्तों को धार्मिक स्थलो पर आने पर एक-दुसरे से संपर्क स्थापित करना पडता है। माहिती का आदान प्रदान करना पडता है इसलिए भाषा यहाँ महत्वपूर्ण भुमिका निभाती है। भाषा भाताभि-व्यक्ति का सशक्त माध्यम है। इस प्रदेश की प्राथमिक भाषा मराठी है तथा भक्तों के साथ संपर्क बनाने के लिए दुय्यम भाषा हिंदी का प्रयोग किया जाता है।

हिंदी भाषा हमारे देश की राष्ट्र-भाषा है। बहुत से राज्यों हिंदी की कई बोलीयाँ

Scanned by TapScanner

आवश्यकता होती है जिसे भाषा का पुरा
... हो तथा वह भक्तों को वह इस धार्मिक
... के बारे में सारी बाते बताए। अगर
योग्य पर्यटक मार्गदर्शक मिला तो भक्तों
... लिए योग्य होगा, उन्हे कोई भी परेशानी
होगी। इसके साथ ही मंदिर की स्वच्छता
... और सुव्यवस्था भी अच्छी होनी
... जिससे वहाँ आते ही आत्मीक शांती
अनुभव हो।

भाषा हमारे समाज में एक
... पूर्ण भूमिका निभाती है। ऐसे स्थानों पर
... होती है- जहाँ से भक्त फुल, प्रसाद और
... लेते है। ऐसे दुकानदारों को भी इनसे
बातचीत करनी आनी चाहिए जिससे की भक्तों
... लुट नही होगी। अगर सुसंवाद न हो
... दस रूपए की वस्तु बीस रूपए में बेचकर
... भक्तों का फायदा उठाते है। इसी के
... ऐसे धार्मिक स्थानों पर आने-जाने के
... बस और रिक्शा होती है। यहाँ पर भी
... से आनेवालो से ज्यादा पैसे वसुले
... सकते है। अगर हमें भाषा का पुरा ज्ञान
तो यह नही होता।

इस प्रकार हमें धार्मिक स्थानो
पर आने के बाद भाषा का ज्ञान होना आ...
-वश्यक है। जिससे हम दुसरो के साथ संपर्क
स्थापित कर सकते है।

निष्कर्ष

प्राचीन परंपरा से आज तक में धर्म, धार्मिक आराधना को महत्व प्राप्त हुआ है। शनि शिंगणापुर आज भी हर एक राज्य से भक्त शनि में अपने दुख: दर्द दुर करने के आते है।

ऐसे धार्मिक स्थानों पर भक्तों कुछ समस्याओं का सामना करना पडता विचारों का आदान-प्रदान करने के लिए की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। मात्र ज्ञान न होने से बातचीत में परेशानी है। धार्मिक स्थानों पर जाने से आंतरिक एवं सुख की अनुभुति होती है।

Scanned by TapScanner